

भारत सरकार  
रेल मंत्रालय

लोक सभा  
24.07.2024 के

अतारांकित प्रश्न सं. 339 का उत्तर

तीव्र गति वाली रेल पटरियों पर कवच प्रणाली

339. श्री अरविंद गणपत सावंतः

श्री श्रीरंग चंदू बारणेः

क्या रेल मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या रेल पटरियों की अधिकतम गति क्षमता को पहले ही बढ़ाकर 130 किमी प्रति घंटा कर दिया गया है और बाद में इसे 160 किमी प्रति घंटा से अधिक बढ़ाने का प्रस्ताव है;
- (ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (ग) क्या तीव्र गति वाली रेल पटरियों पर स्वचालित रेल सुरक्षा प्रणाली "कवच" की आवश्यकता है;
- (घ) यदि हां, तो पहले चरण और दूसरे चरण में कवच प्रणाली लगाए जाने के लिए चिह्नित की गई रेल पटरियों का ब्यौरा क्या है;
- (ङ) उन रेल पटरियों का रेल मार्ग-वार ब्यौरा क्या है, जहां कवच प्रणाली स्थापित की गई है; और
- (च) महाराष्ट्र में उन रेल पटरियों का ब्यौरा क्या है जहां कवच प्रणाली स्थापित की गई है और लगाए जाने का प्रस्ताव है?

उत्तर

रेल, सूचना और प्रसारण एवं इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री

(श्री अश्विनी वैष्णव)

(क) से (च): विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है।

\*\*\*\*\*

तीव्र गति वाली रेल पटरियों पर कवच प्रणाली के संबंध में दिनांक 24.07.2024 को लोक सभा में श्री अरविंद गणपत सावंत और श्री श्रीरंग चंदू बारणे के अतारांकित प्रश्न सं. 339 के भाग (क) से (च) के उत्तर से संबंधित विवरण।

(क) और (ख): 130 किलोमीटर प्रतिघंटा तक गति बढ़ाना सतत और निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। अभी तक, भारतीय रेल में लगभग 11,000 मार्ग किलोमीटर पर खंडीय गति को 130 किलोमीटर प्रति घंटा तक बढ़ाया गया है।

(ग) से (च):

1. कवच स्वदेश में विकसित स्वचालित रेलगाड़ी सुरक्षा प्रणाली है। कवच अत्यधिक प्रौद्योगिकी प्रधान प्रणाली है, जिसके लिए उच्चतम स्तर के संरक्षा प्रमाणीकरण की आवश्यकता होती है।
2. यदि लोको पायलट ब्रेक लगाने में विफल रहता है तो कवच स्वचालित ब्रेक लगाकर लोको पायलट को निर्दिष्ट गति सीमा के भीतर रेलगाड़ी चलाने में सहायता करता है तथा खराब मौसम के दौरान भी रेलगाड़ी को सुरक्षित ढंग से चलाने में भी सहायता करता है।
3. कवच के कार्यान्वयन में कई जटिल गतिविधियां शामिल हैं, जैसे-
  - क) प्रत्येक स्टेशनों पर स्टेशन कवच की संस्थापना।
  - ख) समूचे रेलपथ में आरएफआईडी टैग की संस्थापना।
  - ग) समूचे रेलखंड में दूरसंचार टावरों की संस्थापना।
  - घ) रेलपथ के साथ ऑप्टिकल फाइबर बिछाना।
  - ङ) भारतीय रेल में चलने वाले प्रत्येक रेलइंजन में लोको कवच की व्यवस्था।
4. अभी तक दक्षिण मध्य रेल में 1465 मार्ग किलोमीटर और 144 रेलइंजनों में कवच की व्यवस्था की गई है।
5. इस समय, दिल्ली - मुंबई और दिल्ली - हावड़ा गलियारों (लगभग 3000 मार्ग किलोमीटर) के लिए कवच संबंधी मुख्य मदों की प्रगति निम्नानुसार है :
  - i. ऑप्टिकल फाइबर केबल बिछाना: 4275 किलोमीटर
  - ii. दूरसंचार टावरों की संस्थापना: 364 अदद
  - iii. रेलवे स्टेशनों पर उपस्कर की व्यवस्था: 285 अदद
  - iv. रेलइंजनों में उपस्कर की व्यवस्था: 319 रेलइंजन
  - v. रेलपथ पार्श्व उपस्कर की संस्थापना: 1384 मार्ग किलोमीटर
6. भारतीय रेल ने अन्य 6000 मार्ग किलोमीटर के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) और विस्तृत अनुमान भी तैयार कर लिया है।
7. उपरोक्त उल्लिखित मार्ग का भाग महाराष्ट्र से भी होकर गुजरता है।
8. कवच को चरणबद्ध तरीके में उत्तरोत्तर रूप से मुहैया कराया जा रहा है।

\*\*\*\*\*